उपसंहार

उपसंहार

आँचलिकता स्वातंत्र्योत्तर साहित्य की एक नूतन प्रवृत्ति है, जिसमें किसी अंचल विशेष के संपूर्ण वातावरण का संश्लिष्ट दस्तावेज़ प्राकृतिक पृष्ठभूमि में दर्ज किया जाता है। आँचलिकता के रूपायन के लिए स्थानीय दृश्य, प्रकृति, जलवायु, त्योहार, लोकगीत, बातचीत का विशिष्ट ढंग, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, भाषा या बोली, लोगों की चारित्रिक व व्यवहारगत विशेषताएँ, नैतिक मान्यताएँ आदि का समावेश बडी सतर्कता के साथ किया जाना अपेक्षित है। आँचलिकता के जरिए रचनाकार सांस्कृतिक पुनःनिर्माण का कार्य करता है। आँचलिक साहित्य प्रकृति और मनुष्य के बीच के गहरे संबन्धों को रूप प्रदान करता है। आँचलिक रचनाकारों का मूल उद्देश्य आँचलिक जीवन का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करके पाठकों को उन परिस्थितियों से अवगत कराना तथा वहाँ की पिछडी हुई जीवन परिस्थितियों में सुधार लाने की प्रेरणा देना रहा है। भारत में अब भी अनेक अंचल पिछडे हुए तथा आधुनिक जिन्दगी से कटे हुए हैं, इसलिए आँचलिक साहित्य के लिए अनेक संभावनाएँ विद्यमान हैं। आँचलिक साहित्य की दिशा स्वतंत्र तथा लक्ष्य उदात्त है।

मार्कण्डेय आँचलिक कथा साहित्य का एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उन्होंने उत्तरप्रदेश के पूर्वांचलों को अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। उनकी रचनाओं में ग्रामांचलिक जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक

पहलुओं को यथार्थवादी धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। समाज के निचले तबके की वकालत करना उनकी रचनाओं का लक्ष्य रहा है। कृषकों, मज़दूरों एवं भूमिहीनों की दयनीय दशा, गरीबी, भूखमरी, अज्ञान, अंधविश्वास, वर्ग चेतना, वर्ग संघर्ष, ज़मींदारों की अमानवीयता, भ्रष्टाचार, दलित शोषण, नारी जीवन की त्रासदी एवं नव उन्मेष आदि का प्रभावशाली चित्रण ने मार्कण्डेय की रचनाओं को उल्लेखनीय बना दिया है।

मार्कण्डेय ने स्वानुभूत तत्वों के आधार पर आँचलिक जीवन यथार्थ को उजागर किया है। स्वातंत्र्योत्तर स्थितियों और सामाजिक ज़रूरतों के फलस्वरूप मानवीय संस्कारों एवं मूल्यों में भारी परिवर्तन आ गया। संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में तब्दील हो गया। मार्कण्डेय ने अपनी रचनाओं में संयुक्त परिवार के विघटन का चित्रण करते हुए उन तमाम परिस्थितियों एवं कारणों पर भी प्रकाश डाला है जो इस विघटन के लिए उत्तरदायी हैं। मार्कण्डेय के पात्र जिस वर्ग के हैं, वे अपनी वर्गीय खासियतों के साथ ही अपना परिचय देते हैं। ऐश और आराम से जीनेवाले उच्चवर्ग, न ऊपर न नीचे की हालत में तड़पते मध्यवर्ग, अभावों से जकडे निम्नवर्ग, इन तमाम वर्गों का जीवन्त चित्र मार्कण्डेय ने तन्मयता के साथ उद्‌घाटित किया है। उनके कथा-साहित्य में निम्नवर्गीय समाज का चित्रण ही ज़्यादा मिलता है। यह वर्ग दो वक्त की रोटी जुटाने के लिए संघर्षरत है।

मार्कण्डेय के कथा साहित्य के ज़रिए अंचल की शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक चित्र प्राप्त होता है। अंचल के ज्यादातर लोग अशिक्षित हैं। अज्ञान की

वजह से गाँववालों के नजरिए संकीर्ण एवं संकुचित हो गये हैं। गाँव में नारी शिक्षा को बेमतलब की बात समझा जाता है। उनकी रचनाओं में नारी दोहरे शोषण का शिकार है। एक ओर वह सगे-संबन्धियों से उपेक्षित और सतायी हुई है तो दूसरी ओर सामंती समाज से पीडित है। वह बालविवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों से जकडी हुई है। उन्होंने नारी को अपने अधिकार के लिए संघर्षशील बनाया है। मार्कण्डेय हाशियेकृत लोगों का पक्षधर हैं। दलित, किसान, मज़दूर, नौकर आदि की जिंदगी सामंतों के दरवाजों पर खटने के लिए बाध्य है। उनका साहित्य हाशियेकृत लोगों की जिन्दगी को स्वस्थ बनाने की कोशिश का परिणाम भी है। उनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ का शायद ही ऐसा कोई पहलू होगा जो उनसे छूट गया हो।

मार्कण्डेय का कथा साहित्य स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य का प्रामाणिक दस्तावेज़ है। उनकी राजनीतिक दृष्टि मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है। स्वातंत्र्योत्तर युग से लेकर ग्रामांचल कूट राजनीति का अड्डा बन गया है। ज़मींदार, ठेकेदार तथा नौकरशाह राजनीति के केन्द्र में आ गये। नतीजतन राजनीति तमाम विकृतियों से घेर ली गयी। जन-मानस के सुनहरे सपने टूट गये। गाँधीवादी विचार क्षीण पड़ गया। राजनीतिक गठजोड और दलबंदी ने लोगों के बीच की एकता को तोड़ दिया। मार्कण्डेय ने राजनीतिक क्षेत्र में पनपती अवसरवादिता, रिश्वतखोरी, घोषणबाजी, गुटबंदी आदि का पर्दाफाश किया है। राजनीतिक नेताओं तथा सरकारी कर्मचारियों के दखलंदाजी के कारण स्वातंत्र्योत्तर युग में बनायी गयी ज्यादात्तर आर्थिक विकास योजनाएँ असफल हो गयी हैं। परिणामतः गाँव में

गरीबी, अभाव और भूखमरी बढ़ गई। आर्थिक विषमता के खिलाफ निम्नवर्ग के लोगों में संघर्ष उत्पन्न हो गया। मार्कण्डेय की रचनाशीलता का मुख्य स्वर आर्थिक शोषण का विरोध है। मार्कण्डेय को राजनीतिक और आर्थिक अंतर्विरोधों से उत्पन्न सभी समस्याओं को उकेरने में पर्याप्त सफलता मिली है।

मार्कण्डेय के कथा साहित्य में पूर्वी उत्तरप्रदेश के ग्रामांचलिक सांस्कृतिक जीवन बखूबी से उतारा गया है। लोगों के बीच की एकता एवं सहयोग की भावना ग्रामीण संस्कृति की खासियत है। वहाँ के लोग प्रकृति से मिल-जुलकर जीना पसंद करते हैं। प्रकृति उनकी जिन्दगी का आधार है। खेती करना उनके लिए मात्र आजीविका अपनाने का मार्ग नहीं है, बल्कि उनकी संस्कृति है। यह संस्कृति उन्हें प्रकृति के साथ एकता स्थापित करने की प्रेरणा देती है। मार्कण्डेय ने अपनी रचनाओं के जरिए इस प्राकृतिक भावबोध को बढ़ावा दिया है।

दरअसल ग्रामजीवन में संस्कृति और धर्म के बीच खास अंतर नहीं दिखाई देता है। ग्रामीण सामाजिक संरचना और उसके विकास में संस्कृति और धर्म का व्यापक प्रभाव रहता है। मार्कण्डेय ने अपने कथासाहित्य के जरिए ग्रामीण संस्कृति और धार्मिक जीवन की खासियत और विगलित मान्यताओं को भी अभिव्यक्त कर दिया है। पर्व, त्योहार, लोकगीत जैसी ग्रामीण सांस्कृतिक चिह्नों का हूबहु वर्णन उनकी रचनाओं में मिलता है। सदियों से चले आ रहे झूठे आचरण, पाखण्ड, अंधविश्वास तथा रूढिगत मान्यताओं ने ग्रामीणों की मानसिकता को जटिल बना दिया है। उन्होंने सांस्कृतिक एवं धार्मिक खोखलेपन का पर्दाफाश करके उसका जमकर विरोध किया है।

मार्कण्डेय ने कलात्मक और शिल्पगत बारीकियों को बचकाना मानते हुए उसे वस्तु की अभिव्यक्ति के प्रभावशाली माध्यम के रूप में ही अपनाया है। उन्होंने अपने कथासाहित्य में परिवेश के बहुआयामी सन्दर्भों को प्रामाणिकता के साथ चित्रित करके सजीव बना दिया है। स्थानीय बोली, मुहावरे, लोकोक्ति, लोकगीत, चित्रात्मक शैली आदि के प्रयोग आँचलिक साहित्य की सृजनात्मक अनिवार्यताएँ हैं। इसके जरिए ही लेखक स्थान विशेष का वातावरण एवं वहाँ के लोक जीवन को पूरी वफादारी के साथ अभिव्यक्त कर पायेगा। मार्कण्डेय के कथा साहित्य इन खासियतों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति के क्षेत्र में मार्कण्डेय की सबसे बडी उपलब्धि उनकी भाषा शैली है। उनकी रचनाओं की सरल एवं सहज भाषा जनजीवन को अभिव्यक्त करने में सफल सिद्ध हुई है। ग्रामीण शब्दावली, बिंब, मुहावरे आदि के प्रयोग से कथ्य में जीवंतता आ गई है। मार्कण्डेय ने अपने कथासाहित्य के कलात्मक पक्ष को सशक्त बनाने का प्रयास ज़रूर किया है।

इसप्रकार मार्कण्डेय ने अपने कथा साहित्य में ग्रामांचलिक जीवन से सम्बन्धित जिन समस्याओं को उठाया है उसका क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। इन समस्याओं के प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण में उनकी प्रगतिशील दृष्टि सदा सक्रिय रही है। उनके कथा साहित्य इस तथ्य पर ज़ोर देते हैं कि मौजूदा सामाजिक व्यवस्था ही तमाम समस्याओं की जननी है। उनके विचार में इन समस्याओं का समाधान इस व्यवस्था के बदलने तक संभव नहीं है। इसलिए व्यवस्था तंत्र को चुनौती देने का काम उन्होंने रचना के ज़रिए किया है। ज्यादात्तर आँचलिक रचनाकारों की दृष्टि आँचलिक जीवन की सतह पर ही केन्द्रित रहती है। बल्कि

मार्कण्डेय जी ने अंचल की गहराई तक उतरकर जन साधारण के जीवन को देखा और परखा है। वास्तव में ग्रामांचलिक जीवन के नए-नए क्षेत्रों का अन्वेषण कर उन्होंने प्रेमचंद तथा रेणु की परंपरा को आगे बढाने का प्रयास किया है। वह आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के लिए महान उपलब्धि बन गया है।